Settlement of Khas Land in Tripura

*529. **Shri Dasaratha Deb:** Will the Minister of Home Affairs be pleased to state:

(a) how many petitions from tribals have been received by the Chief Commissioner, Tripura during 1957-58 so far for the settlement of khas land which was already in their possession;

(b) the action taken on these petitions; and

(c) whether any Nazarana is charged for settling these khas lands?

The Minister of State in the Ministry of Home Affairs (Shri Datar): (a) 473.

(b) They have been scrutinised and the deserving ones have been accepted.

(c) No.

Machines in Ordnance Factories

597. **Shri S. M. Banerjee:** Will the Minister of Defence be pleased to state:

(a) the total number of machines lying idle in various Ordnance Factories;

(b) the reasons therefor; and

(c) the value of such machines?

The Deputy Minister of Defence (Sardar Majithia): (a) Approximately 75 per cent of the machines are actually working, 1·8 per cent are under repair, 1·2 per cent under installation and 22 per cent are at present lying idle.

(b) A statement giving the reasons is laid on the Table of the House. [See Appendix III, annexure No 44.]

(c) The book value of idle machines is approximately Rs. 1·77 crores.

Steel Supply to Orissa

598. **Shri Panigrahi:** Will the Minister of Steel, Mines and Fuel be pleased to state:

(a) the quota of Steel including C.I. Sheets and various kinds of rods allotted to Orissa during 1948 to 1957 year-wise; and

(b) the quantity not lifted or utilised year-wise?

The Minister of Steel, Mines and Fuel (Sardar Swaran Singh): (a) and (b). If the Hon'ble Member wants information regarding the total quantity of steel allotted to users in Orissa State by both State and Central agencies, a statement (No. I) showing the total quantities allotted and supplied from 1948 to 1957 is laid on the Table of the House. [See Appendix III, annexure No. 44A.]

A statement (No. II) showing the allotment for general and agricultural purposes to the Orissa State and the quantities supplied against these allotments is also laid on the Table of the House. [See Appendix III, annexure No. 44A.]

भारतीय खनि विभाग के अन्तर्गत प्रयोगशालायें

५९९. **श्री म० ला० द्विवेदी :** क्या इस्पात, खान और ईंधन मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) भारतीय खनि विभाग के अन्तर्गत प्रयोगशालाओं के पुनर्गठन तथा विस्तार के सबध में अब तक क्या प्रगति हुई है ।

(ख) इस पुनर्गठन के परिणामस्वरूप कितना अधिक तथा किस प्रकार का कार्य हो सकेगा ; और

(ग) इस पुनर्गठन तथा विस्तार कार्य पर कुल कितना व्यय हुआ है और कितना व्यय करने का विचार है ?

इस्पात, खान और ईंधन मंत्री (श्री के० डे० मालवीय) : (क) भारतीय खनि विभाग की प्रयोगशाला जून, १९५४ में स्थापित की गई थी उस समय इसमें ६ तकनीकी कर्मचारी और लगभग ८०,००० रुपये लागत के उपकरण (equipment)

थे । उसके बाद इसका आवश्यकतानुसार विस्तार किया गया और अब इसमें ४१ तकनीकी कर्मचारी और लगभग १२,००,००० रुपये की लागत के उपकरण हैं ।

(ख) भारतीय खनि विभाग की प्रयोगशाला में अब कच्चे पदार्थों की विस्तृत ड्रेसिंग (Dressing), कच्चे पदार्थों और खनिज पदार्थों के रसायनिक विश्लेषण एंव शैल सम्बन्धी परीक्षण करने के लिये उपकरण भी मौजूद हैं । जैसे ही पायलट प्लान्ट (Pilot Plant) स्थापित करने के लिये स्थान उपलब्ध होगा इसी वर्तमान उपकरणों और कर्मचारियों से कुछ पायलट प्लान्ट परीक्षण किये जा सकेंगे ।

(ग) प्रयोगशाला स्थापित करने और अन्य सामग्री इत्यादि पर अब तक लगभग १३ लाख रुपये का कुल खर्च किया जा चुका है । सामग्री के लिये अभी लगभग ३५,००० रुपये और देने हैं ।

कोयले के पूर्वेक्षण का कार्यक्रम

६००. श्री म० ला० द्विवेदी : क्या इस्पात, खान और ईंधन मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) भारतीय खनि विभाग के कोयले के पूर्वेक्षण के विस्तृत कार्यक्रम के अन्तर्गत कोयला खानों के विकास के लिये अब तक क्या कार्यवाही की गई है ; और

(ख) कोयले के पूर्वेक्षण के इन कार्यों का क्या परिणाम निकला है ?

इस्पात, खान और ईंधन मंत्री (श्री के० डे० मालवीय) : (क) भारतीय खनि विभाग को १९६१ तक प्रशासन क्षेत्र में १२ मिलियन (million) टन और कोयला उत्पादन करने के लिये आवश्यक संचित मात्रा प्रमाणित करने की विस्तृत पूर्वेक्षण करने का काम सौंप दिया गया है । विभाग ने इस काम के लिये आवश्यक कर्मचारी नियुक्त कर लिये हैं और आवश्यक उपकरण (equipment) भी खरीद लिये गये है । राष्ट्रीय कोयला विकास निगम (National Coal Development Corporation) जो कोयले के वास्तविक उत्पादन के लिये उत्तरदायी है, द्वारा चुने हुये विभिन्न कोयला क्षेत्रों में खुदाई का काम शुरू कर दिया गया है । जनवरी, १९५८ के अन्त तक विभाग ने कुल २,५४,००० फुट पर खुदाई का कार्य पूरा कर लिया था ।

(ख) जनवरी, १९५८ के अन्त तक ५२८.८५ मिलियन (million) टन संचित मात्रा (Reserves) प्रमाणित कर दी गई है ।

पन्ना हीरा

६०१. श्री म० ला० द्विवेदी : क्या इस्पात, खान और ईंधन मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) पन्ना में हीरे के पूर्वेक्षण के लिये भारतीय खनि विभाग ने क्या कदम उठाये है ;

(ख) अब तक इसके क्या परिणाम निकले हैं; और

(ग) इन परिणामो के अनुसार भविष्य के लिये क्या कार्यक्रम बनाया गया है ?

इस्पात, खान और ईंधन मंत्री (श्री क० दे० मालवीय) : (क) भारतीय खनि विभाग ने १९५५–५६ और १९५६–५७ में मझगांव के पन्ना हीरक क्षेत्र मे पाइप एरिया (Pipe area) से नमूने निकालने का कार्य किया । २० गढे खोदे गये और नमूने लिये गये ।

(ख) कई गढे खोदने से मालूम हुआ था कि ४० फुट नीचे हीरक द्रव्य मौजूद